जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

उदयपुर

Rashtradoot

फोनः- 2418945 फैक्सः- 0294-2410146 वर्षः 31 संख्याः 170 प्रभात उदयपुर, बुधवार 24 अप्रेल, 2024 आर.जे. 7202 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

ठंडी हवाओं वाले तापमान में जीवन के साथ एडजस्ट करना आर्कटिक सील्स के सरवाइवल के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यह बात तो सभी जानते हैं कि, ठंडे मौसम में अनुकूलन के लिए इन जानवरों के शरीर पर चरबी की मोटी-मोटी परतें होती हैं, लेकिन अब पता चला है कि, इन जानवरों की नाक की विशेष संरचना भी अनुकूलन में इनकी मदद करती है। हाल ही में हुए एक शोध में पता चला है कि, हल्के तापमान में रहने वाली सील्स की तुलना में आर्कटिक सील्स की नाक के पैसेज (मार्ग) अधिक घुमावदार होते हैं। बायोफिज़िकल जर्नल में प्रकाशित शोध के अनुसार, ठंडे और शुष्क क्षेत्रों में जानवर जब सांस लेते हैं तो उनके शरीर की नमी और गर्मी कम हो जाती है। फेफड़ों को अच्छी तरह काम करने के लिए कुछ गरम और आद्र हवा की ज़रूरत होती है, इसलिए ठंडी हवा में सांस लेना फेफड़ों के लिए खतरा हो सकता है। इस खतरे को कम करने के लिए अधिकतर पक्षी और जानवर प्रजातियों की नेज़ल कैविटीज़ (नाक की गुहिका) में ''कॉम्प्लैक्स बोन्स'' (जटिल हड्डियाँ) होती हैं जिन्हें ''मैक्सिलोटर्बिनेट्स'' कहते हैं। ये पोरस (छिद्रित) हड्डियाँ म्यूकस (कफ, बलगम) और टिशू से ढकी होती हैं जो कि सांस के साथ अंदर जाने वाली हवा को गर्म और नम करते हैं। बाहर छोड़ी गई सांस के साथ गर्मी और आर्द्रता में कमी आती है और मैक्सिलोटर्बिनेट्स गर्मी और आर्द्रता के इस ह्रास को कम करती हैं। शोधकर्ताओं का मानना है कि, नाक की ये संरचनाएं सांस लेते और छोड़ते समय नमी और गर्मी को बनाए रखने में आर्कटिक सील्स की मदद करती हैं। नॉर्वेजियन युनिवर्सिटी ऑफ साइन्स एण्ड टैक्नॉलजी में फिज़िकल कैमिस्ट्री की प्रोफेसर तथा शोध की सहलोखक, सिन्या शैल्स्रुप ने एक वक्तव्य में कहा,''नेज़ल कैविटीज़ में इस जटिल संरचना के कारण, एक से वातावरण में भी, सब ट्रॉपिकल सील्स के मुकाबले आर्कटिक सील्स में सांस लेते और छोड़ते समय गर्मी का ह्रास कम होता हैं। इससे आर्कटिक सील्स को इवोल्यूश्नरी एडवांटेज (विकासवादी लाभ) मिलता है। शैल्स्रुप के अनुसार सांस लेते और छोड़ते समय आर्कटिक सील्स हवा की 94 प्रतिशत नमी को बरकरार रखती हैं।

कांग्रेस का मानना है, प्रथम चरण की वोटिंग के बाद प्र.मंत्री रक्षात्मक मुद्रा में आ गये

'यह ही कारण है कि, इस बार 400 पार का नारा दो तीन दिन में नेपथ्य में चला गया है'

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 23 अप्रेल। वर्तमान में चल रहे लोकसभा चुनावों में एक नया "ट्विस्ट" आया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और भाजपा ने "400 पार" का नारा नेपथ्य में डाल दिया है जिसे अब तक वो नियमित रूप से इस्तेमाल कर रहे थे। पिछले दो दिनों से प्रधानमंत्री मोदी ने अपने भाषणों में इस नारे का इस्तेमाल नहीं किया है। कांग्रेस खेमे का तो यह भी प्रचार है कि, भाजपा केवल अपने मतदाताओं और कार्यकर्ताओं को उत्साहित व संगठित करने के लिए इसका उपयोग कर रही थी। तथा इसे गंभीरता से लेने की तो बात ही नहीं थी। लेकिन इसका विपरीत असर हुआ है। भाजपा कार्यकर्ता अपने घर बैठ गया है और आर.एस.एस. कार्यकर्ताओं पर भी यही बात लागू होती है।

- **साथ ही यह भी कहा जा रहा है कि, प्रथम चरण के मतदान के बाद, प्र.मंत्री मोदी ने अचानक व गुप्त यात्रा की नागपुर की और संघ प्रमुख मोहन भागवत से मुलाकात की, हालांकि, गत दस वर्ष में प्र.मंत्री मोदी ने भागवत से कोई खास मुलाकात व बातचीत नहीं की थी।**
- **कांग्रेस खेमे का तो यह भी प्रचार है कि, अबकी बार 400 पार के नारे का उपयोग तो केवल भाजपा व संघ के कार्यकर्ता का मनोबल ऊँचा रखने के लिए था, तथा कभी भी इसे गंभीरता से लेने की तो बात ही नहीं थी।**

विपक्ष ने भाजपा के इस नारे का उपयोग इस बात पर जोर देने के लिए किया कि, भाजपा संविधान को बदलना चाहती है तथा देश में प्रजातंत्र को खत्म करना चाहती है।

यह संदेश वायरल हो गया है तथा प्रधानमंत्री को एक रैली में स्पष्टीकरण देना पड़ा कि, संविधान को बदलने का कोई सवाल ही नहीं है तथा स्वयं अंबेडकर भी ऐसे परिवर्तन नहीं कर सकते।

क्या भाजपा और प्रधानमंत्री रक्षात्मक मुद्रा में हैं?

क्या भाजपा संकट में है?

सत्ता के नजदीक सूत्रों का कहना है- हाँ।

मतदान के पहले चरण के बाद परिणाम यह था कि, नरेन्द्र मोदी ने नागपुर की तुरन्त तथा बहुत गोपनीय यात्रा की, आर.एस.एस. प्रमुख मोहन भागवत से मिलने के लिये, जिन्हें उन्होंने गत 10 वर्ष से किनारे कर रखा था तथा नज़र अदांज किया हुआ था। इस अवधि में वे न तो भागवत से मिल रहे थे न ही वार्तालाप कर रहे थे।

चूँकि वे आर.एस.एस. के "बॉस" ही नहीं, बल्कि मोदी के भी "बॉस" हैं, अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा के दौरान जब राम मंदिर का उद्घाटन हो रहा था, उन्हें एक साइड में बैठाया गया था।

लोकसभा चुनाव के पहले चरण में कम मतदान ने मोदी को विचलित कर दिया है तथा भाजपा के समीक्षकों का कहना है कि, यदि यह प्रवृति इस तरह आगे चली तो यह नरेन्द्र मोदी के लिये बड़ा संकट बन सकती है।

स्तब्ध हैं तृणमूल कांग्रेस के नेता भी, ममता बनर्जी की भाषा व भद्दे शब्दों के उपयोग से

क्या सार्वजनिक भाषण व बातचीत में ''अशोभनीय'' भाषा का प्रयोग ममता बनर्जी की कुण्ठा व हताश होने की निशानी है

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 23 अप्रैल। अत्यधिक खेदजनक बात है, ममता बनर्जी बंगाल की राजनीतिक भाषा को बहुत ही भद्दे और निचले स्तर तक ले गई हैं।

अभी तक कोई सोच भी नहीं सकता था, लेकिन ममता बनर्जी ने एक चुनावी भाषण में मंच से पुरूष जननांग की बात करते हुए अत्यंत अशिष्ट भाषा का उपयोग किया। उसके बाद से उनके भाषण का वीडियो क्लिप सोशल मीडिया पर खूब सर्कुलेट हो रहा है तथा और भी अश्लील कमैन्ट्स के साथ वायरल हो गया है।

यह केवल एक घटना नहीं थी। समय-समय पर चुनावी मंच से वो अपने भाषणों में इस तरह की अशिष्ट भाषा का प्रयोग करती रही हैं, जिनमें से कुछ पर उन्हें स्वयं भी खेद हुआ है। अब यह उनके बोलने का तरीका हो गया है।

- **इस संदर्भ में नवीनतम है, शिक्षा विभाग द्वारा की गयी हजारों नियुक्तियों को, गलत व भ्रष्टाचार में लिप्त मानते हुए हाई कोर्ट द्वारा रद्द करना।**
- **ममता बनर्जी बाध्य हैं, हाई कोर्ट के आदेश की अनुपालना करने के लिये, पर, दूसरी ओर जनता के समक्ष भ्रष्टाचार का पर्दाफाश काफी अटपटी स्थिति पैदा कर रहा है तथा मध्यम वर्ग भी अब संदेह व संशय की दृष्टि से देख रहा है, तृणमूल सरकार के दस साल के शासन को।**

कुछ सम्मानित राजनीतिज्ञ खुलेआम ममता बनर्जी की पारिवारिक पृष्ठभूमि तथा उनके संस्कारों की बात कर रहे हैं। बंगाल के "भद्रलोक" सोशल सर्कल में इस तरह की भाषा का प्रयोग सख्ती से निषिद्ध है। ममता द्वारा इस्तेमाल किए गए शब्दों को परिवार के बीच बोला भी नहीं जा सकता।

लेकिन पिछले कुछ समय से उनके भाषण तथा भाषा लगातार और भद्दी और असामाजिक होती जा रही है। प्रतिद्वंदी राजनीतिक पार्टियों तथा नेताओं ने इसकी निंदा भी की है लेकिन कोई फर्क नहीं पड़ा है। उनके भाषणों की भाषा भद्दी से भद्दी होती जा रही है।

निजी तौर पर, लंबे समय से उनके सहयोगी रहे नेताओं ने भी स्वीकार किया है कि, आपस में बात करते हुए भी वो अपमानजनक भाषा का प्रयोग करती हैं। जो लोग उनको छोड़कर जा चुके हैं, वो अब उनके बुरे गुस्से और "भद्दी" भाषा को याद कर रहे हैं। शायद उनकी भाषा शैली उनकी निराशा के अनुरूप बदलती जा रही है। क्योंकि, वो हर तरफ से अपने आपको घिरा हुआ महसूस कर रही हैं तथा उनकी तृणमूल कांग्रेस प्रभावी पार्टी के रूप में उभरेगी, इस बात की संभावनाएं क्षीण होती जा रही हैं, जिससे उनका संतुलन भी प्रभावित हो रहा है।

स्कूलों में टीचरों की नियुक्तियों को लेकर अदालत के नवीनतम आदेश ने भारी गड़बड़ी पैदा कर दी है। स्कूल टीचरों की नियुक्ति पर कल के कोर्ट के आदेश ने भारी अव्यवस्था पैदा कर दी है। वो अदालत के आदेश की क्रियान्विति को टाल नहीं सकतीं ना ही टीचरों की बर्खास्तगी को रोक सकती हैं। इसके साथ ही, कई ऐसे योग्य प्रत्याशी हैं जिनकी नियुक्तियाँ वास्तविक हैं, वो भी प्रभावित हुए हैं। वृहद् स्तर पर हुए भ्रष्टाचार तथा आवेदकों से वसूले

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

बसपा पर भाजपा की ''बी टीम'' को टिकट देने का आरोप

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 23 अप्रैल। बसपा सांसद दानिश अली, जो उत्तर प्रदेश में अमरोहा लोकसभा सीट से चुनाव लड़ने के लिए दल बदलकर कांग्रेस में शामिल हो गए, ने मंगलवार को बहुजन समाज पार्टी (बसपा) सुप्रीमो मायावती पर आरोप लगाया कि, वे अपनी पार्टी का टिकट "भाजपा की बी टीम" को दे रही हैं।

अमरोहा में आयोजित एक जनसभा में उन्होंने दावा किया कि, बसपा के प्रत्याशियों का चुनावों के लिए

- **बसपा छोड़ कांग्रेस में आये सांसद दानिश अली ने एक रैली में यह आरोप लगाया।**

चयन भाजपा ने किया है। उन्होंने जोर देकर यह भी कहा कि, प्रधानमंत्री मोदी 19 अप्रैल को सम्पन्न हुए प्रथम चरण के चुनावों में पार्टी के खराब प्रदर्शन से काफी निराश हैं।

दानिश ने प्रधानमंत्री मोदी पर आरोप लगाया कि, चुनावों में उनकी (दानिश) पराजय सुनिश्चित करने के लिए मोदी ने ऐड़ी-चोटी का जोर लगा दिया है। दानिश ने यह भी कहा कि, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ दो सप्ताह में चौथी बार अमरोहा आ रहे हैं, और

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

चुनावी नारों की यात्रा भी कम रोचक नहीं

-श्रीनंद झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 23 अप्रेल। "अबकी बार 400 पार" के भाजपा के नारे का असाधारण पहलू यह है कि, पिछली बार के विपरीत इस बार का नारा किसी एक व्यक्ति अथवा पार्टी की राजनीतिक विचारधारा के इर्द-गिर्द केन्द्रित प्रतीत नहीं होता। पूर्व में राजनीतिक पार्टियों के थीम स्लोगन शक्तिशाली राजनीतिक संदेश दिया करते थे। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) ने एक लोकप्रिय नारा दिया था "तिलक तराजू और तलवार, इनको मारो जूते चार।" वर्ष 2017 में जब कांग्रेस और समाजवादी पार्टी (सपा) ने उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव पूर्व गठबंधन किया था, तब ऐसे होर्डिंग्स और पोस्टर्स लगाए गए थे, जिन पर राहुल गांधी और अखिलेश यादव की तस्वीरें थीं और साथ ही ये संदेश थे- "यू.पी. को यह साथ पसन्द है" और "यू.पी. के लड़के।" वर्ष 2011 में जब लालू यादव और नीतीश कुमार एकजुट हुए थे, तब पटना की गलियों में लगे पोस्टर्स पर लिखा था, "बिहार में बहार है, फिर से नीतीश कुमार है।" कुछ अन्य आकर्षक नारों में आम आदमी पार्टी (आप) का दिल्ली का यह आकर्षक नारा, "अच्छे बीते पाँच साल, लगे रहो केजरीवाल" और पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस (टी.एम.सी.) का यह

- **बसपा ने अपनी राजनीतिक यात्रा की शुरूआत में ''तिलक, तराजू और तलवार इनको मारो जूते चार'' से की थी।**
- **2017 में कांग्रेस व सपा ने ''प्री-पोल अलायंस'' (मतदान पूर्व गठबंधन) किया था, विधानसभा चुनाव में तथा नारा प्रचलित हुआ था, ''यू.पी. को यह साथ पसंद है''।**
- **2011 में जब लालू यादव व नीतीश कुमार ने मिलकर चुनाव लड़े थे, पटना में यह नारा सड़कों पर पोस्टर के रूप में छाया हुआ था, ''बिहार में बहार है, फिर से नीतीश कुमार है।''**
- **आम आदमी पार्टी का नारा था, ''अच्छे बीते पांच साल, लगे रहो केजरीवाल''।**
- **तृणमूल का प्रारंभिक नारा था, ''मां, माटी मानुष''।**
- **2004 में कांग्रेस का नारा था, ''कांग्रेस का हाथ, आम आदमी के साथ'', 2009 में कांग्रेस का नारा था, ''आम आदमी के बढ़ते कदम, हर कदम भारत बुलंद'', 1996 में भाजपा का लोकप्रिय नारा था, ''बारी-बारी सबकी बारी अब की बारी अटल बिहारी''।**
- **1989 में वी.पी. सिंह के लिये लिखा गया नारा, शायद सबसे लोकप्रिय नारा रहा, ''राजा नहीं फकीर है, देश की तकदीर है''।**

नारा "मां, माटी, मानुष", शामिल हैं।

लोकसभा चुनावों में भी राजनीतिक मैसेज या तो व्यक्तित्व केन्द्रित अथवा

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

सबसे अमीर उम्मीदवार

नई दिल्ली, 23 अप्रेल। लोकसभा चुनाव के लिए दूसरे चरण का मतदान आगामी 26 अप्रैल को है। इसके बाद पांच और चरणों के लिए वोट डाले जाएंगे और 4 जून को काउंटिंग होगी। इस वक्त तमाम दल और नेतागण चुनाव प्रचार में पूरी ताकत झोंक रहे हैं। क्या आप जानते हैं कि, इस लोकसभा

- **टी.डी.पी. उम्मीदवार पेमासनी चंद्रशेखर ने अपने परिवार की कुल संपति 5785 करोड़ बताई है। इस हलफनामे के साथ ही वह देश के सबसे अमीर उम्मीदवार बन गए हैं।**

चुनाव में देश का सबसे अमीर उम्मीदवार कौन है?

टी.डी.पी. उम्मीदवार पेमासनी चंद्रशेखर ने अपने परिवार की कुल संपति 5785 करोड़ बताई है। इस हलफनामे के साथ ही वह देश के सबसे अमीर उम्मीदवार बन गए हैं।

'आंध्र से 42 सांसद हैं, पर एक कैबिनेट मंत्री, गुजरात से 26 सांसद पर 6 कैबिनेट मंत्री, यू.पी. से भाजपा के 62 सांसद हैं, पर 12 कैबिनेट मंत्री'

तेलंगाना के मु.मंत्री रैवन्त रेड्डी ने ''साऊथ इण्डिया'' के साथ हो रहे अन्याय की लम्बी सूची गिनायी, भाजपा पर उत्तर व दक्षिण भारत के बीच खाई उत्पन्न करने का आरोप लगाया

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 23 अप्रेल। रैवन्त रेड्डी एक ऐसी पार्टी का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसने वर्ष 1947 के बाद से, जब पंडित जवाहर लाल नेहरू के देश के प्रथम प्रधानमंत्री बने थे, पांच दशकों तक देश पर राज किया था। लेकिन रेड्डी ने केन्द्र में सत्तारूढ़ पार्टी के "हिंदी, हिन्दुस्तान, हिन्दुत्व" दृष्टिकोण को लेकर प्रश्न करने शुरु कर दिए हैं। वे इस पर जोर दे रहे है कि, नरेन्द्र मोदी के वर्ष 2014 में प्रधानमंत्री बनने के बाद से भाजपा दक्षिण भारत की उपेक्षा करती रही है।

यह शायद दक्षिण भारत से कांग्रेस की सबसे मजबूत आवाज़ है। तेलंगाना में मजबूत मानी जाने वाली भारत राष्ट्र समिति (बी.आर.एस.) एवं उसके प्रमुख, तत्कालीन मुख्यमंत्री के. चन्द्रशेखर राव को विषम परिस्थितियों में हराकर कांग्रेस अब नए जोश में हैं। तेलंगाना के विधानसभा चुनावों के कुछ हफ्तों पहले तक तो चन्द्रशेखर राव को हराना असंभव माना जा रहा था।

तेलंगाना के मुख्यमंत्री एम. रैवन्त रेड्डी ने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत आर.एस.एस. की छात्र इकाई, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से की थी। रेड्डी के तेवर उग्र हैं। वे भाजपा और हिंदी भाषी राज्यों के नेताओं की आलोचना करते हुए कहते हैं कि, संसद में अपनी शक्ति के असंगत अनुपात के बावजूद ये लोग सत्ता का मजा ले रहे हैं,

- **मु.मंत्री रेड्डी के अनुसार भाजपा ''नॉर्थ-साउथ डिवाइड'' का फॉर्मूला भाजपा के संगठन में नियुक्तियों के समय भी करती है। रेड्डी ने कहा, पार्टी में भी दक्षिण भारत के भाजपा नेताओं को एक हद तक ही बढ़ने दिया जाता है और रिटायर कर दिया जाता है। उदाहरण के लिये वैंकैया नायडू व राम माधव का नाम लिया जा सकता है।**
- **रेड्डी के अनुसार, इसी कारण से भाजपा दक्षिण भारत की 130 सीटों में इस बार बीस से भी कम सीटों पर जीत पायेगी।**
- **मु.मंत्री रैवन्त रेड्डी ने राजनीतिक जीवन की शुरूआत, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से की थी।**

जबकि संसद के तेलुगू भाषी सदस्यों की उपेक्षा की जा रही है।

आंध्र प्रदेश और तेलंगाना, दोनों राज्यों से कुल 42 सांसद निर्वाचित होकर लोकसभा जाते हैं और दोनों ही राज्यों को मिलाकर वर्तमान में केवल एक सांसद केन्द्र सरकार में कैबिनेट मंत्री है और वो हैं भाजपा के जी. किशन रेड्डी। गुजरात में लोकसभा की कुल 26 सीटें हैं, लेकिन प्रधानमंत्री, गृह मंत्री के अलावा छह कैबिनेट मंत्री वहां से हैं। उत्तर प्रदेश से भाजपा के 62 सांसद हैं, लेकिन केन्द्र सरकार में वहां से 12 कैबिनेट मंत्री है। रेड्डी अपनी शिकायत के समर्थन में तथ्य प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि, "हिन्दी भाषी राज्यों ने राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, रक्षा मंत्री और कई अन्य महत्वपूर्ण संवैधानिक पद हथिया लिए हैं।"

उनका आरोप है कि, भाजपा अपने कार्यों से देश में उत्तर-दक्षिण विभाजन की भावना पैदा कर रही है। बात जब कैबिनेट मंत्री एवं महत्वपूर्ण पदों की करें तो, भाजपा ने ना केवल दक्षिण भारतीय राज्यों की उपेक्षा की है, बल्कि सूखा राहत या प्रोजैक्ट्स की पर्यावरणीय मंजूरी के मामले में भी वह दक्षिण भारतीय राज्यों के साथ सौतेला व्यवहार कर रही है।

तेलंगाना में कांग्रेस के इस सशक्त नेता ने पिछले दो दिनों में मीडिया को दिए गए साक्षात्कारों में कहा कि, भाजपा के भीतर भी दक्षिण भारतीय नेताओं को एक सीमा से अधिक आगे बढ़ने की अनुमति नहीं है। उन्होंने इस संदर्भ में वेंकैया नायडू और राम माधव का नाम विशेषतौर पर लिया। उन्होंने कहा कि,

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'यह राष्ट्र और संविधान बचाने का चुनाव है'

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 23 अप्रेल। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने मंगलवार को एक बार फिर कहा कि, वर्तमान लोकसभा चुनाव सिर्फ नई सरकार चुनने के लिए नहीं है, बल्कि देश व भारत का संविधान बचाने के लिए है।

ट्विटर पर एक पोस्ट में उन्होंने

- **राहुल गांधी ने यह भी कहा कि, सूरत ने राष्ट्र के सामने तानाशाही की तस्वीर पेश की।**

कहा कि, गुजरात के शहर सूरत ने एक बार फिर देश के सामने तानाशाही की एक तस्वीर प्रस्तुत की है।

उन्होंने कहा, बाबा साहब अंबेडकर द्वारा दिए गए संविधान को खत्म करके, अपना नेता चुनने के लोगों के अधिकार को छीनने का यह एक और कदम है।